बाल रचनाकारों को मिले साहित्य अकादमी के पुरस्कार, मुख्य अतिथि बोले...

'बच्चे बनकर लिखें तभी उपजेगा बाल साहित्य'

■ एनबीटी, लखनऊ

बाल साहित्य रचने के लिए रचनाकारों को बाल मनोविज्ञान और भाषा विज्ञान समझना चाहिए। आज कार्यशालाओं और अन्य प्रयासों से बच्चों के साहित्य बेहतर बनाने की जरूरत है।

ये विचार साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा गोमतीनगर के भागीदारी भवन में आयोजित बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह में मुख्य अतिथि प्रो.सूर्यप्रसाद दीक्षित ने रखे। उन्होंने विष्णु शर्मा के पंचतंत्र से लेकर द्विवेदी साहित्य युग, मुंशी नवल किशोर के बाल साहित्य प्रयासों और अवध क्षेत्र के बाल साहित्य की चर्चा करते हुए कहा कि बड़े जब बच्चे बनकर लिखेंगे तभी सार्थक बाल उपजेगा। पराग, नंदन, गुड़िया, चंदामामा जैसी बाल पत्रिकाओं का नाम लेते हुए उन्होंने कहा कि बच्चों को रोमांचक खेल, साहसिक यात्राओं, महापुरुषों की जीवनी और प्रेरक प्रसंग आकर्षित करते हैं। समारोह की अध्यक्षता कर रहे अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि जो भी लिखने वाला अपनी कलम शुद्ध करना चाहता है, उसे बाल साहित्य ज़रूर रचना चाहिए। उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने अमृतलाल नागर की किस्सागोई और आज के बच्चों की रचनात्मक और तार्किक क्षमता की चर्चा करते हुए कहा कि बाल साहित्य रचने के लिए कल्पना की अलग उड़ान चाहिए।